Vol 4 Issue 1 July 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume- 4 | Issue-1 | July-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

GRT

कश्मीरी कवयित्री ललद्यद की सामाजिक दृष्टि

अर्चिता सिंह

शोधार्थी (हिन्दी विभाग), कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।

सारांश :-समाज में जो भी घटित होता है बदलते समय के साथ वो इतिहास में परिवर्तित हो जाता है। कुछ ऐसा ही इतिहास हमारे मध्यकाल का भी रहा है। यह काल हिंदी साहित्य का बहुत ही महत्त्वपूर्ण काल रहा। इस काल में जहाँ एक ओर भारतीय जनता को बाह्य आक्रमण झेलने पड़ रहे थे, वहीं आंतरिक रूप में वह अंधविश्वास, ऊँच–नीच, सामाजिक भेद–भाव, विसंगतियाँ, रूढ़ियों आदि से जकड़ी हुई थी। ऐसी जकड़न से जनता को निकालने का कार्य मध्यकालीन पुरूष व स्त्री संतों ने किया। इन दोनों ने ही समाज में एकरूपता, भाईचारा, प्रेम, समन्वय लाने की अनेक कोशिशें की। कहीं इनका स्वर अक्खड़ रहा, तो कहीं इन्होंने जनता को समझाने के लिए प्रेम का सहारा लिया। कहीं इनकी वाणी में अक्खड़ता आती है तो कहीं हमें इनकी वाणी की प्रखरता, दृष्टि की तीक्ष्णता नज़र आती है, जिसके फलस्वरूप यह समाज की रूढ़ियों, आडम्बरों और अंधविश्वास पर कुठाराघात करते है और जहाँ प्रेम से समझाने की बात आती है वहाँ इनकी वाणी में सरलता, सहजता, शीतलता आ जाती है। यह वो समय था जब संतों ने मंदिर–मस्जिद से ईश्वर को निकालकर उसे समाज के केन्द्र में ला खड़ा किया और उसे जनसुलभ बनाया तथा ईश्वर को मन में, श्रम में दिखाने का सफल प्रयास समाज में किया।

प्रस्तावना :-

हिंदी साहित्य में संतों की एक लम्बी परम्परा रही है, जिनमें पुरूष संतों के साथ–साथ ऐसी अनेक संत कवयित्रियाँ भी हुई, जिन्होंने समाज को अपनी नज़र से देखा और उसके भीतर रहते हुए अपनी एक अलग पहचान बनाई। इसमें कश्मीर की ललद्यद, राजस्थान की मीराबाई, महाराष्ट्र की बहिणाबाई, दक्षिण की कवयित्री अंडाल एवं कर्नाटक की अक्कमहादेवी तथा बावरी साहिबा आदि अनेक कवयित्रियाँ हुई। जिन्होंने ईश्वर की भक्ति, उसके निर्गुण व सगुण रूप को लेकर की और समाज के बाह्याडम्बरों, अंधविश्वासों, रूढ़ियों का विरोध करने के साथ–साथ स्वंय पर हुए अत्याचारों को देखकर घर त्यागा और ईश्वर की भक्ति में लीन हो गई।

मध्यकालीन संत कवयित्रियों ने समाज के भीतर रहते हुए समाज की जड़ता को तोड़ने का पुरजोर प्रयास किया। इस प्रयास में उसे समाज की प्रताड़ना सहनी पड़ी। भूख, प्यास, लांछन, अपमान सब कुछ सहना पड़ा। यहाँ तक की उसे समाज का त्याग तक करना पड़ा। ललद्यद ऐसी ही संत कवयित्री है जिन्होंने अपने सम्मान, स्वतंत्रता और अस्मिता की लड़ाई 12वीं सदी में समाज का विरोध करके लड़ी। इनके काव्य में इनका व्यक्तित्व साफ नजर आता है। इनके काव्य में इनकी आतुरता, प्रेम (शिव से मिलन) की पीर तथा सास–पति, और समाज की दमघोट जड़ता है, जिसने इन्हें मध्यकालीन चारदीवारी तोड़कर बाहर निकल आने का साहस और विरल अभिव्यक्ति की क्षमता दी, जिससे वह सहज भाव से कह उठी कि–

''गुरू जी ने बात एक ही कही
बहर से तू भीतर क्यों न गई?
बस, बात यह हृदय को छू गई,
और मैं निर्वस्त्र घूमने लगी।''

अर्थात् ललद्यद का निर्वस्त्र घूमना समाज को एक करारा जवाब था कि सिर्फ वस्त्र धारण करने से व्यक्तित्व नहीं बनता अपितु उसे अपनी आत्मा को साफ रखना चाहिए।

कवयित्री ललद्यद ने धर्म, दर्शन और जीवन की गूढ़तन गुत्थियों को अपने 'वाखों' में सहज–सरल रूप में गूंथ दिया है। ललद्यद का काव्य उनके 'वाखों' में मिलता है। डॉ. शशि शेखर तोषखानी लिखते है– ''काव्य रचना के लिए लल्लेश्वरी' ने जिस छंद–रूप को चुना है वह कश्मीरी का अपना मौलिक छंद 'वाख' है। यह छंद कश्मीरी भाषा की प्रकृति के सहज अनुकूल है।...'' ललद्यद का वाख साहित्य का मूलाधार दर्शन है। दार्शनिक चेतना से ओत–प्रोत कवयित्री का प्रत्येक वाख वेदान्त और सूफी चिंतन–पद्धति की छाप लिये हुए है। इनमें शैव दर्शन की गहनता भी देखने को मिलती है। शिव को इन्होने अपना जीवनाधार माना और वन में शिव को पाने के लिए निरन्तर घुमती रही। वह अपने वाखों को जंगलो में

गुनगुनाती रहती। उनके वाख धीरे–धीरे जन–साधारण के बीच पहुँचने लगे और आज कश्मीरी साहित्य की मूलनिधि के रूप में विद्यमान है। इनकी भाषा के सन्दर्भ में रामविलास शर्मा नें कहा है कि– ''लोक भाषा कश्मीरी निम्नजनों की भाषा मानी जाती थी। इस भाषा को साहित्य का शक्तिशाली माध्यम बना देने का श्रेय ललद्यद नाम की स्त्री को है।''

जिस समय ललद्यद का आविर्भाव हुआ, उस समय कश्मीर में इस्लाम–धर्म का एक विचार–पद्धति के रूप में आगमन हो चुका था। प्रदेश में अशांति और धार्मिक अव्यवस्था व्याप्त थी। धर्मान्ध कट्टर–पंथी अपने–अपने धर्म–सम्प्रदायों का प्रचार–प्रसार करने में सन्नद्ध थे। सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विषमताएँ भी जनता के समक्ष धर्म के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए जनता की वाणी में उन्हीं की मातृभाषा में परम–विभु एवं परम–सत्य की सार्थकता को ऐसी व्यापक तथा सर्वसुलभ संघटिनी शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया जिसमें न कोई दुराव था, न कोई आवरण, न कोई दुरुहता थी न कोई विक्षेप। यह सत्य–प्रतिष्ठा विशुद्धता ललद्यद की अन्तरानुभूति की देन है। ललद्यद ने समाज में जो देखा, जो महसूस किया या जो उनके साथ उनके घर में हुआ, उसे देखते हुए उन्होंने सब अपने वाखों के माध्यम से प्रस्तुत किया। ललद्यद उस सिद्धावस्था को पहुँच चुकी थी जहाँ मैं और पर की भावनाएँ लुप्त हो जाती हैं। वह ऐसी भक्ति में लीन थी, जहाँ मान–अपमान, निंदा–स्तुति, और राग–विराग, आदि जैसी मन की संकुचितता को लक्षित करते हैं। जहाँ पंचभौतिक काया मिथ्याभावों एवं क्षुद्रताओं से ऊपर उठकर विशुद्ध स्फुरणाओं का केन्द्रीभूत पुंज बन जाती है–

''चाहे कोई मेरी अवहेलना करे या तिरस्कार,
मैं कभी मन में उसका बुरा ना मानूँगी।
जब मेरे शिव का मुझ पर अनुग्रह है
तो लोगों के भला–बुरा कहने से क्या होता है?''

ललद्यद ने धर्म के नाम पर प्रचलित मिथ्याचारों, बाह्याडम्बरों तथा रूढ़ परम्पराओं का खुलकर खंडन किया। जो काम संत कबीर ने उत्तर–भारत में रहकर किया, वही कार्य कश्मीर में ललद्यद ने (सुलतान अलाउद्दीन के शासनकाल के समय 1344–1355 ई.) किया। कबीर के आविर्भाव से पहले इनके वाख कश्मीर में प्रसिद्ध हो चुके थे। ललद्यद् ने बाह्याडम्बर का विरोध किया और पंडितो पर कटाक्ष करते हुए कहा है–
''यह देव भी पत्थर, यह देवालय भी पत्थर,

ऊपर नीचे सब है एक–समान,
पंडित रे पंडित! पूजा करेगा किसकी?
मन–प्राण का करले तू मिलान।''

इसी प्रकार कबीर ने हिंदुओं और मुसलमानों दोनों को खरी–खोटी सुनाई और कहा–

''पत्थर पूजै हरि मिले, तो मैं पूजौ पहार।
तातै तो चाकी भली, पिसी खाये संसार।।''

तथा

''कांकर पाथर जोरकर मसिजिद लिये बनाये।
ता मुल्ला चढ़ बांग दे, क्या बहरो भया खुदाये।।''

समाज जो तेरा–मेरा के फेर में पड़ा था, उसने ईश्वर को भी बाँट लिया था। ललद्यद ने अपने वाख में उस ईश्वर से अविराम, ब्रह्म और आत्मा दोनों को एक में रचा–बसा मानती है। ललद्यद कहती हैं–

''तू ही मैं,
मैं ही तू–.. .

गुरू नानक ने भी आत्मा और परमात्मा की एकता की बात करते हुए कहते हैं–

''आतम महि रामु, रामु महि आतमु।
आतम रामु, रामु है आतमु।।''

अन्य संतों की भाँति ललद्यद ने भी इस संसार को मिथ्या बताया है। कहा है कि जगत मिथ्या है, यह सब क्षणभंगुर है। जीवन को, जगत को मिथ्या बताते हुए ललद्यद कहती हैं–

''चँवर, छत्र, रथ एवं सिहांसन
आह्लाद, नाट्यरस और वस्त्र रेशमी,
मान लिया तूने इन्हें स्थिर?
मूर्ख स्थिर है मरण, और कुछ नहीं।

कबीर कहते है–
''काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होयेगी, बहुरी करेगा कब।।''

ललद्यद एक स्त्री होते हुए पूरे समाज पर कटाक्ष करती हैं, और अपनी वाणी से उन्हें धिक्कारती, फटकारती हैं। वो कहती है कि संसार में कोई भी पुरूष नहीं है तो मैं किससे पर्दा करूँ तथा मैंने खुद को ईश्वर को समर्पित कर दिया है, तो मुझे किसी कृत्रिम काया की आवश्यकता नहीं है, वो पूरे समाज को नारी के रूप में देखती हैं। इसका दूसरा कारण यह भी है कि वो योग की सिद्धावस्था में पहुँच गई थी जहाँ वस्त्र सिर्फ झूठी रूप लिप्सा को ढकने के लिये होते है, जिसने उस शिव की जो ललद्यद के लिए अविराम है, उसके नाम के वस्त्र धारण कर लिये थे तो उन्हें इन कृत्रिम वस्त्रों की क्या आवश्यकता थी? इसलिए वो उस अविराम, शिव, परमब्रह्म को वन–वन ढूँढती घूमती है। मध्यकालीन दौर में एक स्त्री होकर निर्वस्त्र घूमना समाज को त्यागना, मिथ्या बताना आम स्त्री के बस की बात नहीं थी। यह वह कर सकती है जिसमें पूरे समाज से लड़ने तथा उसे टक्कर देने की विरल क्षमता हो इसीलिए ललद्यद में हमें वो क्षमता, समाज से लड़ने की दृढ़ ताकत नज़र आती है।

ललद्यद उन पंडितों पर भी कटाक्ष करती हैं जो पोथी पढ़–पढ़ कर अपने को पंडित कहते है, पोथी पढ़ने और ढोंग रचने वालों पर अपने वाखों में कटाक्ष करती हुई कहती हैं –

''अविचारी पढ़ते हैं पोथियों को
ज्यों पिंजड़े में तोता रटता ''राम–राम''
दिखलावे को ये ढोंगी पढ़ते हैं गीता
पढी है मैंने गीता, पढ़ रही हूँ अविराम।''

ललद्यद अगर पोथी धारियों पर कटाक्ष करती हैं तो वह निराधार नहीं है क्योंकि उन्होंने अपने गुरु द्वारा दिये गए अनेक ग्रंथों को पढ़ा और समझा था। इसके पश्चात् उन्हें ज्ञात हुआ कि यह पोथियाँ मात्र दिखावा है, जो हर जगह व्याप्त है उसे इन पोथियों में क्या ढुंढना। ऐसे पोथीधारी पण्डितों पर कबीर ने भी कटाक्ष किया है–

''पोथी पढ़–पढ़ जग मुआ, पण्डित भया ना कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।''

नानक ने भी पोथी पढ़ने वालों पर कटाक्ष किया है–

''पढ़ी पुस्तक सधिया बाद, सिल पुजारी बगुल समाध।''

ललद्यद ने समाज में व्याप्त बुराईयों को देखकर कहा है कि ये संसार मिथ्या हैं, सारे रिश्ते–नाते सब दिखावा है अगर इस संसार में कोई चिरकालिक है तो वह है अविराम, अनश्वर प्रभु शिव और उस शिव को पाकर मेरा जीवन धन्य हो गया, वो तो घट–घट में व्याप्त है। ललद्यद कहती हैं–

''धुल गया मैल जब मन–दर्पण से
अपने में ही स्थित उसे पाया,
तब सर्वत्र दिखने लगा वह, और
व्यक्तित्व मेरा शून्य हो आया।''

ठीक इसी बात को संत कवि कबीर भी कहते हैं–

''जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुम्भ जल जल ही समाना, यह तत कथेहु गियानी।''

दादू ने भी कहा है–

''तन भी तेरा, मन भी तेरा, तेरा पिण्ड परान।
गबसब कुछ तेरा, तू है मेरा, यहु दादू का ज्ञान।।''

ललद्यद मध्यकालीन समय में अत्यन्त चुनौतीपूर्ण कार्य कर रही थी। वह उस समाज के भीतर स्त्री के प्रति उदार भाव चाहती थी जो सदियों से नारी को पददलित तथा भोगमात्र मानते थे। ऐसे समय में स्त्रियों के हित की बात करना समाज में अकेले खड़े होकर पूरी पुरूष जाति को ललकारा और फटकारा अपने आप में बहुत चुनौती पूर्ण कार्य था। कश्मीरी साहित्य का इतिहास में ललद्यद के इस क्रांतिकारी व्यक्तित्व के बारे में लिखा है– ''भूख से मरता हुआ और पतझड़ के पत्तों–सा झरता हुआ बुद्धिमान और बढ़िया भोजन के लिए रसोइए को पीटता हुआ धनी–मूढ़, विषमता का यह बिम्ब कितना जोरदार है। चीथड़े पहने हुए इस औरत ने जिस तरह से मध्ययुगीन समाज–व्यवस्था को उसके अन्तर्विरोधों, पूर्वाग्रहों और जकड़ावों सहित चीथड़े–चीथड़े कर दिया, वह उसे अपने समय के सबसे बड़े क्रांतिकारी व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करता है।''

अन्तोगत्वा ललद्यद मध्यकालीन ऐसी कवयित्री है, जिन्होंने पुरूष संतों की भाँति अपने वाखों में समाज की कुरीतियों, रूढ़ियों, बाह्याडम्बरों, जाति–पाति, छूआ–छूत, आदि पर अपने वाखों के माध्यम से समाज को फटकारा एवं नया मार्ग प्रशस्त कराया है। समाज में नारी की जो स्थिति थी उस पर खुलकर इन्होंने विचार किया है। इनके वाखों में समाज के प्रति कटुता, प्रखरता, तीक्ष्णता, साफ–साफ नज़र आती है। मगर एक विडम्बना रही है कि यह संत कवयित्री जिसने मध्यकालीन समाज को अपने वाखों से हिला कर रख दिया था, उस संत कवयित्री को हमारे साहित्य में वो स्थान नहीं मिला जो अन्य कवयित्रियों को मिला जैसे मीराबाई। उन्होंने अपने सुख–दुःख के साथ–साथ समाज को भी देखा और उस पर विचार प्रस्तुत किये। परंतु उन्हें वो ख्याति वो प्रतिष्ठि नहीं मिली जो हिन्दी की कवयित्रियों को मिली। ललद्यद ने संत कवयित्रियों में सबसे अधिक समाज को अपने वाखों के माध्यम से लताड़ा, मगर उनके वाख बहुत लम्बा समय तय करके हमारे समक्ष आये और उनके वाख आज भी प्रासंगिक है क्योंकि समाज में आज भी वहीं कुरीतियाँ घर बनाए हुए है जो मध्यकाल के केन्द्र में थी। ऐसी कवयित्रियों को इतिहास के पन्नों से बाहर निकाल कर उनकी प्रासंगिकता दिखाना आज के समाज के लिए अति आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ

1.डॉ. रैणा शिबन कृष्ण– कश्मीरी कवयित्रियाँ और उनका रचना संसार, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, प्र.सं. 1993
2.कौल जयालाल– ललद्यद, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, सं. 2012
3.राही वेद, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया नेहरू भवन, नई दिल्ली, सं. 2008
4.कबीर ग्रंथावली
5.दादू ग्रंथावली
6.मिश्र रमेशचन्द्र, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय,दिल्ली विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण 1995

सहायक ग्रंथ

1.आचार्य चतुर्वेदी परशुराम– संतकाव्य, किताब महल, दिल्ली, सं. 2013
2.डॉ. राजे सुमन–हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, तीसरा सं.2006
3.सं.चतुर्वेदी परशुराम– उत्तरी भारत की संत परंपरा, भारत भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद,द्वि.सं.1964
4.सं.चतुर्वेदी परशुराम– हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास भाग–4, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
5.हरि वियोगी–संत सुधा सार, सस्ता साहित्य मण्डल, इलाहाबाद
6.माधव सिंह भुवनेश्वर–संत साहित्य और साधना, दिल्ली नेशनल पब्लिशिंग हाऊस
7.मिश्र रमेशचन्द्र–संत साहित्य और समाज, आर्य प्रकाशन मंडल, सरस्वती भण्डार, प्र.सं.1994

1.रैणा शिबन कृष्ण, कश्मीरी कवयित्रियाँ और उनका रचना संसार; वाख 12,पृ.स.52
2.वही ,पृ. स. 7
3.शर्मा रामविलास, भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश, पृ.स.–128
4. रैणा शिबन कृष्ण, कश्मीरी कवयित्रियाँ और उनका रचना संसार; वाख–,पृ.स.11
5.रैणा शिबन कृष्ण, कश्मीरी कवयित्रियाँ और उनका रचना संसार;,पृ.स. 45
6.कबीर ग्रंथावली
7.कबीर ग्रंथावली
8.रैणा शिबन कृष्ण, कश्मीरी कवयित्रियाँ और उनका रचना संसार; वाख 4,पृ.स.44
9.नानक ग्रंथावली
10.रैणा शिबन कृष्ण, कश्मीरी कवयित्रियाँ और उनका रचना संसार; वाख 6,पृ.स.46
11.कबीर ग्रंथावली
12.रैणा शिबन कृष्ण, कश्मीरी कवयित्रियाँ और उनका रचना संसार;ावाख 11,पृ.स. 51
13.कबीर ग्रंथावली
14.नानक ग्रंथावली
15.रैणा शिबन कृष्ण, कश्मीरी कवयित्रियाँ और उनका रचना संसार; वाख 16,पृ.स. 56
16.कबीर ग्रंथावली
17.दादू ग्रंथावली
18.तोषखानी शशि शेखर, कश्मीरी साहित्य का इतिहास,पृ–42

अर्चिता सिंह
शोधार्थी (हिन्दी विभाग), कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net